

ASHL. ARCHIVES
2619
RILEY, J. H.

2617

1012 212 1415

१ नागसमाधिसूक्त ॥

ॐ नमो श्री वज्र सत्त्वाय ॥ ॐ श्री ह्रीं श्री मन्त्रं सगुणं वनचक्रं ध्यायेत् ॥
उसमन्वाह जन्तु मां वृद्धा अस्य स्वादि कुसीलिनी ॥ नमो वज्राय नाहं जानव
जघनागनाजा ऊज्यं वज्रं ध्यात्वा सर्वनाशं समधिपस्य फाहं ह्यरुनाः सप्रव
जाय सन्नयकं सर्वसत्त्वजननीं धर्माय वज्रं भासका इह ॥ ॐ शुभा वसुधा
सर्वधर्माद्यादि ॥ शुभा वसुधा वज्रात्मका इह ॥ दक्षिण हस्तं कान्तं
न्यादि ॥ ॐ वज्रं यशस्व हस्तं ॥ ॐ वज्रांति रवे हस्तं ॥ ॐ लोमां योनां अंशु ॥ ॐ ना
गं रुक्मं कनकं मनीवं हस्तं ॥ ॐ हस्तं ॥ सिल ॥ हां ॥ उद्धीय वृक्षी ॥ कर्ण
हस्तं ॥ वज्रं हस्तं ॥ नासिका ॥ हां ॥ वज्रं ॥ हां ॥ कर्ण ॥ हां ॥ हृदय ॥ हां ॥ माहि ॥ हां
॥ गुच्छ ॥ हां ॥ पाद ॥ हां ॥ सिखा ॥ अंशु न्या ॥ ॐ श्री ह्रीं ॥ यिको यविष्ठान ॥

ॐ वं स्वाहा वज्र ॥ ॐ नूं स्वाहा ॥ यष्ट ॥ धूं स्वाहा ॥ पूष्य ॥ नां स्वाहा ॥ गंध ॥ गं
स्वाहा ॥ ध्य ॥ नां स्वाहा ॥ दीय ॥ ॐ जां स्वाहा ॥ याद्र ॥ ॐ वज्र रुम स्वाहा ॥
महु लयाना ॥ दिग्बन्ध ॥ ॐ सुहनी हूं रुद्र ॥ ॐ गृह ॥ १ हूं रुद्र ॥ आदि ॥ ॐ मटि
किस्वस्वष्ट देवना कामनृपक्षस्वष्ट दिविकसिक्कमसायानि सूर्योक्च हूं कालनि
यनि ॥ दक्ष दिग्बन्ध कालनाक ॥ ॐ मदनी वज्र रुद्र ॥ ॐ सर्वपापविघ्न ॐ चान
न माजायद्रवावरुद्र वमनृक्षा सुसुजादीनयनायनान्यसंग ॥ रुद्र हूं सर्वपाप
वसाकिरावयित्वा मंत्री कनूक्ष मूदिनायकाः सर्वसत्त्वसमसोहृत्वा स्वष्ट दिष्ट
रुर्वकाज ॥ वीजयनिशामृगा ॥ घालसुजनननदक्ष दिग्गननलोकवां रुक्मिण ॥
सर्वदेवनननक्षानललसि ॥ आकर्ष ॥ वज्री कृष्ण ॥ आदि ॥ ॐ वज्र वनृक्ष

प्रवृत्तसत्काजाय अर्थ आयमर्तप्रतिरुद्धाहा ॥ ऊं हूं वं हूं ॥ १ ॥ पुष्पन्यास ॥ ॐ
आश्वेजीवनी हवव नूधाय स्वाहा ॥ ॐ आश्वज वनूधाय ॥ दधू ॥ ॐ वीसुकी नाग
जाऊय ॥ हूडान ॥ ॐ कदकाय ॥ खडाम ॥ ॐ ककूटकाय ॥ थडान ॥ ॐ ययमाय
॥ ॐ वस ॥ ॐ हूल ॥ नागजाऊय ॥ खडाकान ॥ ॐ मंमहाभाय ॥ खडाथकान ॥ ॐ
कूलिकाय ॥ ॐ उथकान ॥ ॐ श्रीं खयालाय ॥ ॐ उकाकान ॥ मन्नाअय ॥
यनिकामरधस ॥ पूर्व ॥ ॐ गगधगीजाय ॥ ॐ वं वदप्ररुतागजाऊय ॥ ॐ वं व
मनागजाऊय ॥ ॐ सूर्यप्ररुतागजाऊय ॥ ॐ श्रीं मंनवाकुनागजाऊय ॥
ननादक्षिणदानमरधस ॥ ॐ मंमविनिदनागजाऊय ॥ ॐ मंमधियमना
जाऊय ॥ ॐ श्रीं वृद्धप्ररुतागजाऊय ॥ ॐ वं वधेनागजाऊय ॥ ॐ हूं हूं

[illegible]

पूजाय लोनात्मानं निर्याम्यामि ॥ सर्वसत्त्वपत्रिदार्श्यात्माधीनिर्याम
यामि ॥ संसाहवमिह माहमय द्रुयायै उंसर्वधदकनवोक्तमनाहिरु
दधायामि मिहिरुका नृधनिवमनसापूजनां नानासर्ववृद्धवृद्धक
वृद्धकूलयशुका नमधुजमिहिरुमंगलकालिप्रवृद्ध ॥ कसुबेलावकुमाद्य
रुदाकयो वृद्धा माहाजगनिधयनिधमयामि आध्वनदशवलभनश
ययामि ॥ पञ्चद्वयनिकलकनृधउविहधर्मविशुद्धिहृन्यानम
दसमर्गसंघजिनात्मजगजुनगुधिनमहान् ॥ निर्याम्यामि निहिरुनि
जदाहकनवृद्धाय सामंगनाय द्रुयात्मकार्य ॥ सर्वोत्तमाहिरुमनवक्तुनि
जिजुनार्थयिन् ॥ त्येकध्वजगदशवयलिग्रहाय ॥ महावनाभूकनः

चलालयवाधिर्जगदर्थसिद्धियामनरुचवाधियदसाहायद ॥ सामा
ध्याम्यायगुह्यायानका ॥ नरुसैवाधिसंमलयुजयुजशमनथार्यका
नदवायधर्माधजाह्नकनद्रयनिलकाजधगित्तिकोशनकल्लुहल्ल
हर्म ॥ नद्रयनिलकाजशवनृशरधनयदाल्लहर्म ॥ नद्रयनिलकाजश
पृथिवीचरुजसुयीनकाधीविश्वविकवजाल्लहर्म ॥ नद्रयनिलकाजश
सुमन्त्रचरुजल्लमयकाकधूरआपरशमहिन ॥ नद्रयनिलकाजशकय
कालचरुजसुचरुघीलचरुसाजशहृषिर्हल्लाहलकिकिनीजाल
वकलिकमसिर्वयर्थ ॥ नन्तरध्वयकाजयनिधमृगपद्ममेजीवि
हवकेशलकनाशककदिहृकायनिस्यस्यकायनिमृगी ॥ वकाज

वीजवचनधवेनायनयनिधामर्गवचनधनागनाजाखुनवर्धुमन
व्यस्यसफरुधध्यादिर्न ॥ ४० ॥ सर्वादिवलधनवासकननागया
धवलधनद्रव्यालिङ्गिर्नः नारुनधसर्वाकालेविविधसंस्कारजर्धः
मधिस्यलिर्न ॥ ४१ ॥ नरुपूर्वदलेवासकिनागनाजाखुनवर्धुनवर्धुधध
दिर्नदक्षिधवचनद्रव्यामद्रव्यालिङ्गिर्नवाकानवीजविहाय ॥ ४२ ॥ दक्षि
दलनद्रुननागनाजाजकवर्धुयकुरुधधध्यादिर्न ॥ नकाजवीजदक्षि
धअरुयहसुवासमद्रव्यालिङ्गिर्नयधधन ॥ ४३ ॥ यश्चिमदलककोटक
नागनाजाहनिनवर्धुसफरुनाध्यादिर्न ॥ ककाजवीजदक्षिधललिर्न
वासमद्रव्यालिङ्गिर्नवावयन् ॥ ४४ ॥ अरुनदलयमनागनाजाधध्रवधु

विष्णुश्चक्रादिर्नैऋतिकाजवीजं दक्षिणेश्वर्यवामद्वयालिङ्गिर्महावयव
 विदिता ॥ अग्नयश्चक्रं चन्द्रनागनाजाः कूर्कवर्धुदक्षारुक्षश्चक्रादिर्नैऋ
 काजवीजं दक्षिणेश्वर्यवामद्वयालिङ्गिर्महावयव ॥ १ ॥ नैऋतः
 महायज्ञनागनाजाः सिम्भकवर्धुद्विज्जिदक्षारुक्षश्चक्रादिर्नैऋतेश्वर्य
 मध्वर्जः ॥ वामद्वयालिङ्गिर्महाकाजवीजं महावयव ॥ २ ॥ वायव्यदलकः
 लिङ्गनागनाजाविश्ववर्धुद्विज्जिदक्षारुक्षश्चक्रादिर्नैऋतेश्वर्यवामद्वयालिङ्गिर्महा
 काजवीजं विराट् ॥ ३ ॥ इक्ष्वाकुनदलकः खेया
 लनागनाजापीनवर्धुनवर्धुश्चक्रादिर्नैऋतेश्वर्यवामद्वयालिङ्गिर्महाकाजवीजं
 विराट् ॥ ४ ॥ मध्यय
 ज्ञसंज्ञायाः निना ३३ न ॥ पूर्वयज्ञयज्ञिकासंज्ञानवाया ॥ ५ ॥ उं शुक्ल

नागनाडा रुप निगडी मन्तागनाडा रुप वधुयखाहा ॥ मरध ॥ उं वधु
परुतागनाडा रुप वधुय ॥ ४ ॥ उं सूर्य परुतागनाडा जानक वधुय ॥
वाम ॥ उं सगवाडू नागनाडा रुप म वधुय ॥ वाम ॥ दक्षिदिगयनि
काय ॥ उं मविन्ना नागनाडा यीन वधुय ॥ मरध ॥ उं मधिपरुतागनाडा
रुप वधुय ॥ ४ ॥ उं रुद्र नागनाडा खग वधुय ॥ ४ ॥ उं वधनागना
जानक वधुय ॥ वाम ॥ उं रुद्र नागनाडा रुप म वधुय ॥ वाम ॥ ४ ॥ य
धिमघानपनिका ॥ ४ ॥ उं गंगनागनाडा जानक वधुय ॥ मरध ॥ उं सिव
नागनाडा रुप वधुय ॥ ४ ॥ उं रुद्र नागनाडा खग वधुय ॥ ४ ॥
दिक्ष ॥ उं वकी नागनाडा यीन वधुय ॥ वाम ॥ उं रुद्र नागनाडा रुप म व

धुयः॥ वामः॥ ॥ उरुनक्षत्रपत्रिका॥ ॥ ॐ अतिननागनाजाध्याम
वधुयः॥ मरुधः॥ ॐ अतिननागनाजाध्यामवधुयः॥ दक्षिणः॥ ॐ अन
वधुयः॥ नागनाजाध्यामवधुयः॥ दक्षिणः॥ ॐ अतिननागनाजाध्यामवधुयः
॥ वामः॥ ॐ अतिननागनाजाध्यामवधुयः॥ वामः॥ ॥ विदिगयत्रिका
नसः॥ ॐ अतिननागनाजाध्यामवधुयः॥ अरुणः॥ ॐ अतिननागनाजाध्यामवधुयः
यः॥ नमः॥ ॐ अतिननागनाजाध्यामवधुयः॥ वायुः॥ ॐ अतिननागना
जाध्यामवधुयः॥ वायुः॥ ॐ अतिननागनाजाध्यामवधुयः॥ ठीः॥ ॥
पूजाद्यैः कुलधियैः नागनाजाध्यामवधुयः॥ सत्त्वार्थयसदा
निर्णयवशुदीनमस्तु॥ ॥ अतिननागनाजाध्यामवधुयः॥

लीविहृक्षुआदिर्न पञ्चगथागम दिगवर्धुस्वस्वमकुक्षधायनीयाहव
नि॥ ॥ उँवजुधार्गवनीहँ उँसत्त्ववकीहँ उँनत्त्ववकीहँ उँधर्मवकीहँ
उँकर्मवकीहँ ॥ समयसत्त्वस्वामसत्त्वमवलोकिनेपरधन॥ ॥ आख्याः
उँहँ वँहाः ॥ अरिधकमहावकीभादिः ॥ मकुटवजुधेष्टः नामाचार्यः ॥
वँ अँ जिखँहँ ॥ उँदेकाहिधक पूष्यन्नास ॥ अथामसिषवकानिका
यममुलमरुम ॥ अगन्नास ॥ उँविष्यकायविष्यजननालीवचूधना
गमाजाविद्रुहँ भिजहँ उँह्या ॥ उँधुकाशदवाहववासरुकि
॥ हिँ कर्धु ॥ वृद्धाजय पूष्यजतीमडागजलनालिका ॥ सूर्यनन्दक
याल ॥ हँ वदूधया ॥ श्रीगामिला निलन ॥ अँखयाल ॥ हँ नासा ॥ अग

न नार्द्धा कर्कोटक कर्क मख ॥ चिपन चिल नय दश नाम जम ॥ ककका ॥
उं कर्कध आयु व्यन सर्व जस्य धला दन कलिक ॥ कं छदय ॥ यमना
म लं का न लाके ले ॥ हं ना हो ॥ माहाय न र धो ला ऊ खना ॥ हं गुक ॥
कृष्ण द क वा धा कलिक ॥ हो या द ॥ कं हा ग वा न नां ग ॥ कं शिखा ॥ शु
र धा य रु व न रु ध य ना ग म धा म न ना निले ज स्व सा मो न्य ना ग से व्य न्ना ॥ उं व
नू धा य रु वं कं स्वाहा ॥ ॥ कनी वलि द आ न ॥ उं आ व म न प्र मि रु स्वाहा
उं व ऊ नू धा य ख ख खा हि श मि रु र्व न्ध र म म क स्य सा नि पू क नू र्शी
ध आ ग रु र्व र्वा य य रू रू रू रू स्वाहा ॥ उं आ ४ कं हो ४ उ य वि उ य
य म क कर्कोट क वा स कि धी ख पा ल कलिकान न न क क क म हा य न ह्य

सर्वनिवाजस्य ॥ ॐ देवलिगम्भपूष्यधूपदीपमकुण्डदद्यात्पुहं वागन
सर्वनिवाज ॥ ॐ धीध्रु ॐ मर्वलिगुक्त २ स्वादनुपीर्वकुण्ड ॥ ॐ वहा ॥
सर्वफानु सर्वसत्त्वानां धीध्रु ॥ ॐ किंयुष्टिं कुचकुं कं ॥ ॐ द्वधन आहाययः
किं ॐ स्वाहा ॥ यलाद्यमुनि ॥ ॐ किनागसमाधिसमाफ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
उन्नतः श्रीवक्तृसत्त्वाय ॥ यनानिकुपस्वयन ॥ नाही कामरामीनेरुनिवाग्ब ६
मर ॥ ॐ हिनका वीज हनधा सुयाधान ॥ पूर्वा ॥ विहि स्वानडा वीज नीलधा
ल ॥ ॐ द ॥ वि मास वीज पूष्य वागधा सिज ॥ ये ॥ वि का वीज मति क ॥ धा सु क
यह ॥ ॐ ॥ वि पूवा वीज मज ॥ धा सु डाहा ॥ ॐ ॥ वि हास वीज क ॥ टी ॥ धा सु
कल ॥ ने ॥ वि नेका वी विद्वल धा सु ली ॥ वा ॥ वी सायूहास वीज नाडा कः

धाम्नि ॥ ७७ ॥ श्रीपलका श्रीज महिकवाहु उहा ॥ सुगुमिपश्चमृमृ ॥ हिमि
गुथिश्च नराहनि वाग्वल्कायास्यं यक ॥ धननिवनिविधानक्रियाया
यधूनछाडीकमीहसुपूजादनकस्वस्तिवाहनधूनछाडीप्रविष्टायासखसि
प्रवेहीलायग्वठल अष्टनागवावर्ककायनयचन्द्रविस्वरुमयाउमरुधप
नरवाननहयकीजलकृष्णकायनयश्चसुकाकृमानिसुयकानहिनु ॥
पश्चविहिपेस्वस्रषादियश्चयलवयश्चमृमृयने ॥ धर्मिधायनायाछाडी ॥
१ वायुगुनमधुलतिधनसमाधिहीमाधिवासनधीलकीयकृधीयकृ
०० नायकउपूजाधूनछाडीजलकृष्णधिसान ॥ ॥ सुखं कलं ॥
धीखलखनहाय ॥ उं मेदनिवजिभीएववजवश्च ॥ वजनश्रुधिसान ॥

उं वज्रसत्त्वः ॥ ४ ॥ कृष्णकायः ॥ ५ ॥ ॐ मङ्गलम् ॥ ६ ॥ लाकपालः ॥ ७ ॥
लाङ्गुलिः ॥ ८ ॥ सुनयनिः ॥ ९ ॥ वज्रहस्तः ॥ १० ॥ सर्वयक्षाधिपः ॥ ११ ॥
नमाम्यहं ॥ १२ ॥ नालकायमहानर्जः महिम्ना सन्निभः ॥ १३ ॥
श्रीकृष्णकनकनमाम्यहं ॥ १४ ॥ सुदृढः ॥ १५ ॥ सुनयनः ॥ १६ ॥
लसत्किङ्कर्यवन्महायनमाम्यहं ॥ १७ ॥ सुनयनः ॥ १८ ॥
लसत्किङ्कर्यवन्महायनमाम्यहं ॥ १९ ॥ ॐ नमः ॥ २० ॥
नर्जः सुनयनः ॥ २१ ॥ नर्जः सुनयनः ॥ २२ ॥
॥ २३ ॥ लाकावर्धुः ॥ २४ ॥ लाकावर्धुः ॥ २५ ॥
लासन्निभमाम्यहं ॥ २६ ॥ यवहस्तः ॥ २७ ॥

दर्वीगुग्मसुत्तनमाम्यहं ॥ १ ॥ सुनयातिविनर्तव्यं शुक्लवर्धुमहाकुलस
दाकल्याननिगधशिवपूजकनमाम्यहं ॥ ८ ॥ उच्चैर्वैष्णवीनवधुर्वैकु
र्वर्धुपालगश्चक्रमधुनूअकसुखं हंसां नृटनमाम्यहं ॥ २ ॥ नागनाकुम्भ
धवलीकृमा अलिकलधूर्गं यमयनिर्मास्ति नशुसयनागनमाम्यहं ॥
५० ॥ विधिर्वीक्ष्य भववैचव अमृगकसंयुक्तं संघीकृकनकवधुयशास
ननमाम्यहं ॥ ११ ॥ कर्माकुलधायन ॥ कयलासर्गखलय ॥ उच्चैर्न न
वास्तुकिर्नककककोटकयमसहायमशखपालकलिकवनूधयालद
वर्गिमहादवगिसामसिखिमहासिखिदधुधनमहादधुधनअयला
लक्ष्मलूनदीधनन्दसागनमहासागनअनवनकशीकानिस्त्र

भूर्भुवः स्वः नमो

श्रद्धेयति

उत्तराश्विनी

यमहासुनूयरुद्राहिकमहादलसिनिमेहासिनिहमहानागमधियः
मियनालीकयमागुरुत्वयनार्थस्यसिस्वाहा॥ नमोऽग्रापरधन॥ ॥
हामहावना॥ नमोऽग्रायमहुलमरध्वकोजधयममालेचनद्वयनिर्य
कालाश्चर्नवनूयनूयचकनरवीदिशुजहुक्कवर्धुसफरुधालेकनीः
वामनागयाधधनाः पूर्वदलअनकनागजाजानीलेवधुविशुना॥
दक्षिणदलयमनागजाजहुक्कवर्धुयैशुना॥ यधिमदलेकक
नागनाजानकवधुनवरुना॥ उरुजदलेवासुकिनागजाजस्यावः
धुसिफरुधाले॥ अग्निदलेसरवयालनागजाजानकवधुसफरुधाले
नेमस्यदलेककोटकनागजाजधवलवधुसफरुना॥ वायुधदले

कलिकनागवाजाकूईसवर्धुसिफरुता ॥ श्रीक्षानदलमहायज्ञनाम
जाजायीनवर्धुसफरुता ॥ स्वस्वमूडाविहायस्वाहमुसनीयनासमय
संक्षमपस्मानतप्रहिहिहाहावनक्षदवअक्षकलमहानागभधियन
हउम्वेदीययनाविनीयआगच्छहृक्वस्व ॥ आ.या.पू.तिनाऊन
॥ १ ॥ नार्कनाऊन ३ नार्कनाऊनमूडा ॥ उं वं वं नृधाययहृस्वाहा ॥ उं अनना
यहृ ॥ उं वासुकिहृवहृ ॥ उं नृकायहृनहृ ॥ उं यथायहृनहृ ॥ उं म
हायथायहृनहृ ॥ उं धीरवपालायहृनहृ ॥ उं कक्षाटकायहृनहृ
॥ उं कलिकायहृनहृ ॥ यं मु ॥ वज्रधदयानागनाऊनस्वस्वदवय
स्तिनमेताभयसदानिर्णवज्रधायनममुन ॥ उं सर्वमथागमकायविद

॥ धन स्वाहा ॥ धी ख कुल न स्तान ॥ ॐ वं ऊ द प्य ध हं ॥ क स क न क न ॥ इ इ
स्व ध न ॥ ॐ स्व धु ला ह हं ॥ न ना कुल सि मा वि य ॥ ॐ वं ऊ वं न धा धि य न
सु ब वि द्या ह ल २ ॥ कु ल सि मा वि हि सा ध न ॥ ॐ स्व धु ला ह हं स्वा हा ॥
ॐ न ना व न ध धु क्ता ध र्क न धा व र्क ल प्र मा धी धु क्त व र्क वि हा न्य ॥ ॐ
वं ऊ वं न धा य स्वा हा ॥ व र्क सि ॥ ॐ वा धि द्र का य स्वा हा ॥ ओ न ग ग सि ॥ ॐ वं ऊ य
स्वा य स्वा हा ॥ इ म्ब न सि ॥ ॐ वं ऊ न मा य स्वा हा ॥ पि ना य सि ॥ ॐ वं ऊ वू व ना
स्वा हा ॥ व र्क सि ॥ ॐ वं ऊ स ह का ना य स्वा हा ॥ अ म्ब सि ॥ ॐ अ म्ब नि ह न व जा य
स्वा हा ॥ कू ॥ ॐ वं ऊ य र्क स्वा हा ॥ म र्क ॥ ॐ स र्व पा य द ह न व जा य स र्व पा य
द ह स्वा हा ॥ स्व न नी ल ॥ ॐ वं ऊ य र्क स्वा हा ॥ कू कू ॥ ॐ वं ऊ व र्ग य स्वा हा ॥ न कू ॥

ॐ वज्रवीजाय स्वाहा ॥ स्वानुत्तम ॥ ॐ सर्वार्थसिद्धि स्वाहा ॥ प्रको ॥ ॐ वज्रदर्शन
कुलाय स्वाहा ॥ कालस ॥ ॐ वज्रनाजाय स्वाहा ॥ नाय ॥ ॐ आ ॥ ॐ स्वाहा ॥ मन्त्र
मूलमकुन्तयि सफवा ॥ वीहिद्रय ॥ कुला क्रियाय ॥ थनहा क्रिधनहा वमन्त्रः
न्यास ॥ जाय ॥ ॐ वज्रवन्धाय ॐ हज्रस्वदीपवर्षाय यरू वंरू स्वाहा ॥ १०८ ॥
नमामधुलध्यायि ॥ थनदवयुजा ॥ धूपनिनाञ्जनयं लाघ्यं मुनि ॥ कुलरिधियकि
नागनाजाय स्वस्वदवास्ति न सत्वाथेयिसदानिर्गवन्धाय नमस्कु ॥ नगीय
वन्त्र ॥ विहिद्रय ॥ थनमधु क्रिधिय ॥ अक्रु क्रुधालीयहास्यपञ्चममन्त्र
नवावावमूलक्रा क्रिधिय ॥ ॐ वन्धाय रू वंरू स्वाहा ॥ नगीरन्धनीवन्
धाय सक्षु क्रिस्वाहा ॥ ॥ ॥ यं लाघ्यं मु ॥ थनहिनिमहाजं सा रिद्रवा

कृष्णायामदानवियः॥ प्रमिष्टाकृष्णसादानवियसमालः॥ यनगभनर्मिआगमस
कहाउठाउठाधूपयाय॥ ४०॥ खलंखनहाय॥ ४१॥ खलंनोहहंरुद्रवाहा॥ वे
ऊनअधिविष्टानयाय॥ ४२॥ कुंखंमूलंमयनीवकीरुववऊवध्वं॥ यनऊऊना
हामनवलदकृष्णविहाया॥ यनधोऊनलवाय॥ यवाकदलवाय॥ गुनसद्य
जयाय॥ ध्यानं॥ लंदवी॥ ४३॥ खिरुकासि॥ सर्ववृक्षानागायिनावय्यानयवि
४४॥ ४५॥ पुमियाजमिनासुमिनासुव॥ यथामालवलंरुग्नी॥ ४६॥ सिंहुनका
यिना॥ ४७॥ मथामालवनकिंत्वासर्वसत्त्वार्थकान॥ ४८॥ रुनसंमर्षी॥ नवलंरुग्नी
नकीवाचमिजलपृथीवीसुमन॥ ४९॥ सूर्यजिह्वं॥ कानऊऊ॥ ५०॥ समरुवऊ
सायि॥ ५१॥ मिवऊपाकानवऊपंऊलवी॥ नानोविहाया॥ विधुवऊवदिजायाऊ

ऊवक्रयनिधामिधायनानिगुवनीविहाय ॥ ॐ अ. पा. निजा ऊन व ऊर्य
याय ॥ यं. ला. धी. सु. ॥ बलि विय ॥ यनथ ॥ हायाया उ. द. ॥ क्रिया विधि ॥ य
निहायाय ॥ यनद वना क्रुति विय ॥ यनी जि विदिग बलि विय ॥ अ. क्रुति ॥
ननाऊलाग्निमखनकै. काने ॥ ऊवक्रुल्यमाननी ॥ ॐ क्व व ऊ विहाय ॥ ॐ अ
एनथ ॥ ॐ न ॥ ॐ अ. य. निहगुवजाय ॥ ॐ न ॥ ॐ वजाय ॥ ॐ स. ॥ ॐ व. वि
टुजाय ॥ ॐ वजग ॥ ॐ सर्वपायदहनवजाय सर्वपायदह ॥ ॐ सायहा ॥
ॐ वजयूथ ॥ ॐ अ. न ॥ ॐ वजवगमय ॥ ॐ न. ॥ ॐ वजविजाय ॥ ॐ स्वा
नउम ॥ ॐ वजजाजाय ॥ ॐ साय ॥ ॐ सर्वसंयद ॥ ॐ कासस ॥ ॐ अ. मृ. नि
यनम ॥ ॐ य. अ. मृ. ॥ ॐ अ. न. इ. इ. स. नु. ॐ न. ॐ य. स. थ. हा. उ. ॐ ला. क्रु. नि

विषयः॥ यत्तन्निमहावलि विषयः॥ यिहान्नः॥ यः दग्धुनिवलि स्थानमनः प्रकृतं
यायः॥ श्रीखसः इन्द्रगयाऽं सर्वधुवर्धनः॥ रुमायनः॥ मधुन विसर्जितः
गुननः॥ गुणदकः॥ पूजाः॥ कर्माहि यः कः श्रुतिर्वादिः॥ सवाङ्गुतिः॥ कर्माहि
मधुलयागः॥ सिद्धिः॥ मधुलयागः॥ मधुलयागः॥ मधुलयागः॥ मधुलयागः॥
मिस्तनः॥ कुलकुलः॥ मिस्तनः॥ मिस्तनः॥ मिस्तनः॥ मिस्तनः॥ मिस्तनः॥
नानिपूजाः॥ समयावकः॥ कुलदानः॥ कुलदानः॥ कुलदानः॥ कुलदानः॥ कुलदानः॥
सदापूजयन्निः॥ वानिधः॥ न्यदवः॥ ब्रह्मधयः॥ आदोग्वनमिद्वः॥
श्रीः॥ मिजास्यः॥ प्रकायः॥ वः॥ विरुः॥ गावयाः॥ सर्वमनः॥ दः॥ कुलनः॥ गीः॥ धियः॥
पनलाः॥ कः॥ पावतः॥ स्यनः॥ यः॥ कर्मः॥ प्राशिः॥ पदानः॥ नः॥ मिः॥ विरुः॥ वः॥ रुसाः॥ स्य

ॐ नमो वक्षोय ॥ नमो नागहावता ॥ ॥ ॐ नमो यं हलहासुननमधवायुम
हुलेधन्वाणपटाकिमंनसरधवचधंहुकेयटाकपनिममुलेनमीशे
दलयमिनिननसरधवचधनागनाऊसफरुधविहयि नमानप्यासं
दकिधेरुऊनखअधनी ॥ वामहुऊननागयाभधनसर्वालकालह
विनी ॥ कलायनिवऊयय्यकासनस्किनिध्यायागधूपशीखधुव
यंकुरुवमीमहानागमस्मप्रीत्यारगावनाहयावर्षधनाप्रमशरु
॥ धनगुनमहुलसमाधिहृत्वामानसाविविधधंदवयका ॥ धलि
नागपूजावचधकालसह्यानकूलनस्यहावतामटिमिधुनवना
नकनीकंचकनिधनंलावनासमाधिनीवेलावनयनिधमीनवऊव

नृधर्मसर्वोद्धारिणीमानव्याप्त्यैसकुरु॥ हविर्गन्धिचुङ्गवामकननानयाधध
विजिह्वितवज्रवत्तुल्यसमायन्तं॥ श्रीनमः सर्ववन्दनधर्मेदन्दीननाहधनसर्वा
कालसमयसर्वविहाय॥ नमोऽस्तु त्वत्तुल्यमानं॥ नमस्तु त्वत्तुल्यमानं॥ अथोदि
दानपूजोत्तमं॥ ॥ धनधूपश्रीखलुमर्षयाय॥ नतद्वज्रवत्तुल्यमानं॥ को
नसद्वज्रहायकं॥ श्रीखपूजावज्रवत्तुल्यमानं॥ अथपूजा॥ ॥ उवज्रसमयः
सर्वं॥ ॥ ॐ नमोऽस्तु त्वत्तुल्यमानं॥ अथपूजा॥ ॥ उवज्रवत्तुल्यमानं॥ अथ
जामनु॥ नमस्तु त्वत्तुल्यमानं॥ अथपूजा॥ ॥ उवज्रवत्तुल्यमानं॥ अथ
कुरुजसवातातनस्यजायधाम १०८ मन्त्र॥ उवज्रवत्तुल्यमानं॥ अथ
ॐ ह्रस्वदीपवर्षायय १०८ नमस्तु त्वत्तुल्यमानं॥ ॥ पंलाच्यन्तु बलिविय

दूक काय ॥ शुभुतिविय ॥ धन चांकि दानसमय ॥ सकविय अइउम नमय
धर्मा मुनि ॥ १ ॥ कथन पूजा ॥ पूर्व कनक कनक मय कमली कल
मूर्धन हिना जन प्रहसक रुधो मक मय दिशु डी रुका अलि न
ना रुज व मुकु गम का न उय निमन धर्म रुही समय सत्व गत्स महा
न सत्वी ॥ धूप शुभुति अर्थ या गनी तया निमान धर्म पूजा ॥ उं कनका
य रुखा हा ॥ पूजा मन्त्र ॥ गोठ नयाय ॥ उं कनक नाग धि पनय वूं ह
ऊच दी पव वाय य २ रुं न रुं खा हा ॥ ॥ पं ला म् ॥ वलि विय शुभु
नि ॥ कलिनय ॥ मुनि ॥ २ ॥ खानक मय रावना ॥ दक्षिण य म नाग म दिम
यं ग्रीव सना रुत भीष सफ रुध क द द मृ धा न त्रि री दिशु डी क म र्व रु ना

अलिनीनारुनधनुर्जगत्तनीउयनिमनूअसमयसत्वीनलेमीहानसत्वी॥धूप
नकिअर्थपूव्यनागप्रमाथ्वंपूजा॥उंयआयहूँरु॥पूजामुत्तु॥नाउनयो
य॥उंयअमहानागमधियनहूँरुजन्वदीपववापय२हूँनहूँस्वाहा॥ ॥
पं.ला.धं.मु॥वलिवियनुगुमिनवा॥मुनि॥३॥रावना॥यश्चिभनकक
नाअमयंनदावर्लिकठिनसकह॥फूकूजनीदिउजेकसस्वी॥हूँ
नाअलिनीनारुनधनुसय्याकालेउयनिमनूअययसमयसत्वीविलाय
कसुमीहानसत्वी॥धूपसिक्कास॥अर्थमसिक॥प्रमाथ्वंपूजा॥उंआ॥
नककायहूँस्वाहा॥पूजामुत्तु॥नाउन॥उंनककायमहानागमधियनहूँ
रुजन्वदीपववापय२हूँनहूँस्वाहा॥ ॥पं.ला.धं.मु॥वलिविय॥

पुगुनिसाखन ॥ ४ ॥ हावना ॥ उरुजवासरुकिर्नसफरुमीनडुमर्यदिभूज
किमिनेहनिगारीदिउडेकनखीरुगाउलिनीनारुजधसप्याकारैडये
मिमनूयसमयसत्वीमसमीहानसत्वी ॥ धूपकयूजअर्यमेलपूजाप्र
नथ्य ॥ उं आं ॥ वासकीयकृत्वाहा ॥ पूजामनु ॥ गाउन ॥ उं आं ॥ वासकि
सहानागाधियगहउचदीपवर्षाययश्कृतं कृत्वा ॥ ॥ यंलायैरुयैस
वियपुगुनिसाइइ ॥ ३ ॥ अथयर्गवयालसिसकमयत्वाकिर्ककगर्व
सफरुमीयीगादिउडेकनखीरुगाउलिनीनारुजधपन्नगमकारैडयमि
मनुय्यनूयसमयसत्वीमसमीहानसत्वी ॥ धूपवानअर्यनाडागपूजाप्र
मानथ्य ॥ उं आं ॥ वयानायकृत्वाहा ॥ पूजामनु ॥ गाउन ॥ उं वीखयाल

महानागधियमः ॐ हज्जुचुदियवर्षाययश्नं नैर्द्धं स्वाहा ॥ ॥ यं. ला. धी. सु.
वलिविय-उगुनिकुलेर्द्धं कम ॥ ३ ॥ रावना ॥ नेज्जुचुदियवर्षाययश्नं नैर्द्धं स्वाहा ॥
सफरु ॥ ॐ इनीलाहरेवर्षाययश्नं नैर्द्धं स्वाहा ॥ ॥ यं. ला. धी. सु.
अलितनाहरेवर्षाययश्नं नैर्द्धं स्वाहा ॥ ॥ यं. ला. धी. सु.
नसत्वी ॥ धूपजकशान्तर्ययनजामहानिध ॥ ३ ॥ रावना ॥ नेज्जुचुदियवर्षाययश्नं नैर्द्धं स्वाहा ॥
स्वाहा ॥ प्रजान्तरु ॥ गाठन ॥ ३ ॥ रावना ॥ नेज्जुचुदियवर्षाययश्नं नैर्द्धं स्वाहा ॥
धीपवर्षाययश्नं नैर्द्धं स्वाहा ॥ ॥ यं. ला. धी. सु. ॥ वलिविय-उगु
गुनिकुलेर्द्धं कम ॥ १ ॥ रावना ॥ वायुधीकलिकलाहमयसफ
॥ यीनननकनचिववर्षाययश्नं नैर्द्धं स्वाहा ॥ ॥ यं. ला. धी. सु.

मखेहना अलिनीनाहजधः पन्ना उयचिननर्यसमयसत्वीगतसमीहानस
त्वी॥ धूपकनुनि अर्थककनन॥ उं आः कुलिकायस्वा॥ पूजा मनु॥ म
उना॥ उं कुलिकमहानागधियनं हजन्वदीपवर्षायययश्चैतं
स्वाहा॥ ॥ यं लाघं मु॥ वलिवियमुमुनिपूवादि॥ ८ ॥ रावना॥ ८०॥
त्यामहापन्नूयमवनीलायनाकिनशिनीसककशकिनकवहैदि
मुजकमखीहना अलिनीनाहजधः मुजगी उयचिननर्यसमयसत्वीगतसमीहानस
समयसत्वीगतसमीहानसत्वी॥ धूपपनकधु अर्थमूटि॥ धूपन्या॥ उं
आः समयआयस्वाहा॥ पूजा मनु॥ नाउना॥ उं आमहायन्ननागधियनं
हजन्वदीपवर्षायययश्चैतं स्वाहा॥ यं लाघं मु॥ वलिवियमुमु

निःप्रियं गुण २ ॥ अर्थः यायक ॥ वामकनरुधः का न ध दक्षिणवः
न दाहि न य प्रसार्य ॥ ॥ ॥ अर्थः याय ॥ ॥ अर्थः न क वा स वि न क क
क कर्कोट क य म म हा य म धी ख यो ल क लिक व न ध यो न द व नि म हा द
व नि साम सि वि द धु ध न म हा द धु ध न म प ना ल क ल २ स न न्या प न च
सा ग न म हा सा ग न म न व क फ धी का नि म हा का नि स न य ल द्रा हि क म हा
द न नि नि म हा नि नि आ ग क द ग क नी ना ना धि य म यो नु नु व ४ क क द
खा हा ॥ ॥ म धु ल धि ल कः स्वा न न न क नि ॥ ॥ ना क न आ सि धी द
वि स क न ॥ ॥ ॥ क नि ना ग य ऊ वि धि स ना क ॥ ॥ अ न क क इ न सा य
सि स व य क व न को न इ का हि नि स न य क क थ ॥ ॥ व लि म नु ॥ ॥

[illegible]

हिवाभ्यां सन्मान्यमाना नीलनसा विरलधः ॥ ॥ मथवाह ॥ वज्रधस्य अष्ट
रुमया निर्यधवलवस्त्रा इजसहीननस्वर्क ॥ १ ॥ किन्नाकुनवर्ककुल
नननत्वादीकट्टकविषायहानि ॥ २ ॥ यज्ञस्य पोतीयमधुनिकैक
रुद्रवर्क ॥ ३ ॥ नरकस्य कूकमसन्निहीनीलकवायकट्ट ॥ ४ ॥ महा
यज्ञस्य निरुजगत्वा इष्टययानीय ॥ ५ ॥ धीस्वयात्तस्य मधुकवा
यजस कूकमसन्निहीनील ॥ ६ ॥ कट्टकस्य धीनकुनस्वा इष्टीन
जस्य ॥ ७ ॥ कलिकस्य मधुकवायगीननस्वर्कवाजि ॥ ८ ॥ वासुकिन
ककुनिकपीनहनिनवाजि ॥ ९ ॥ नरक्षीनरुद्रार्थमर्थमर्थमर्थमर्थ
नाकनीयथित्वा इत्सापयित्वा नन विस्कर्तुनवाजिसवावचष्टस

2.617

2617

दिक्कदाययम् ॥ ॥ यस्यामहाधनार्हं कृत्स्नमधिर्वर्जवक्रवानदध
नीयः ॥ ॥ यथा ॥ ये कं धनं निग्नं नुजं उर्ध्वयि ॥ ॥ यथा ॥ लक्ष्मीनामायना
अरुनयुगासिनसि ॥ न्यरुमाही टपाय ॥ यज्जालानला क्तिनशुधन
सिनेगक्तुवाय्यदवपु ॥ ॥

२७ प्रकाशका ॥

७७५ काविक कर्म

१॥ अ० क० अ० ॥

१७५५

६पनखांडखाअखांड

१ ह्रस्वान् सिञ्ज नव

१३ यूका यजका

[illegible]

सुसुनिहादि य ॥



— सुसुमिता ८५ ॥

[illegible]

१. स्यान्नामः

१. योऽनुजः

१. योऽनुजः

१. योऽनुजः

१. क्री. मासः १. नृकिसिक्तासः १. हिमि. मङ्गलः
१. म्याक. हाम्लः १. कप. पत्रकमनः १. कलि. प्याः
१. क्री. काननः १. यान. नृपकमनः १. लख. सनयः
१. कय. मृगः १. ककुनि. धनधूपः

१. वाय. जाडीक. न ट
१. क्री. मणि. डी. हा. ल
१. य. मृक. प. ग. ध. प. न
१. ग. सा. ड. ध. न. ध. न. ड. ल

१. समना. मूलः
१. कि. न. हा. अ. नि. सिरवाः १. नाग. आ. वा. ह. न.
१. यो. ना. व. की. उ. व. क. न.
१. क. वा. न. मूल. ग. व. र. वा. न.
१. न. ता. क. सि. क्ता. य.
१. क. न. कि. नृ. प. र्वा.
१. य. ता. र. व. न.
१. ध. न. ध. म. ध. न.
१. इ. ड. वा. नि. य. न.
१. क. लि. ता. य.
१. ला. य. हा. म. ल.
१. सा. नि. कि. नृ. नि. ना. ड. न.
या. न. क. ना.

ॐ



एवमवकायनी ॥ यीशुवर्ध ॥ हेसवाही ॥ धीयः सिना ॥ सगः ठुमा ॥ ककुपिनदि
 ॥ अनननाग ॥ वन्द्यायसुखा ॥ अतिमा इहेनडा ॥ हरमसुखा ॥ ठुइना
 जा ॥ सानिनि ॥ वेन्यः सिद्धात्मकनीया ॥ ठुइनिप्रिया ॥ कषा ॥ ॥ उरु
 न ॥ साह ॥ वनी ॥ ॥ वरुवर्ध ॥ विरुनः खवा इः ववेवाही ॥ पियलसिना ॥
 सगनः कषा ॥ वेनावकिनदि ॥ वासकिनाग ॥ गहानसुखा ॥ प्रवन्द्यनडा ॥
 हरुनिर्यान ॥ कवननाजा ॥ गवकर्ध ॥ वेन्यः सिद्धा सडाप्रिया ॥ उत्मउ
 ल्याकषा ॥ ॥ यथिम ॥ ठुइन्द्रायनी ॥ कृकूमवर्ध ॥ गकुवाही ॥ सगा
 कसिना ॥ सगनः शुद्ध ॥ प्रवीस्तिनदि ॥ ककुकनाग ॥ इलालि लससिन ॥
 यानयन्द्यनडा ॥ सारवानरु ॥ वनूधनाजा ॥ वानूगिनि ॥ वेन्यः सिद्धा

नागभईया॥ वनूधकृ॥ ॥ ददिन वा नाहि ॥ श्री कृ भ सहि ववाही ॥ च
कसिसो ॥ मराजव ॥ ॥ ग्रामयनिनदि ॥ ककी टकनाग ॥ कर्नकरनव ॥
॥ नविनव नुनडा ॥ हक धरवान ॥ उर्मनाजा ॥ कृमनीर्थ ॥ वेमसिद्धा ॥
द्यक्षानिया ॥ काजागिद्व ॥ ॥ अरन कुमानि ॥ नकवर्धः कदि ॥ मय
खायाही ॥ कन ऊसिसा ॥ मराज सगी ॥ मयमाकिनदि ॥ यमनाग ॥ अरुनहाः
समभन ॥ नेतव नुनडा ॥ हक धनरवान ॥ अगिद्व वनाजा ॥ वेमसि
छादियाकया ॥ असुहासकृ ॥ ॥ नेमयविद्व वि ॥ ॥ सवर्ध ॥ चक
गन उवाही ॥ यकमिसिसा ॥ मराज वास ॥ उरुमकिनदि ॥ महायमनाग
जिज्ञवन हगासन ॥ ॥ नविनव नुनडा ॥ हक खिवारवा ॥ उरुना

जा॥ गन्धर्वमि॥ वेद्यसिद्धा॥ ककुलिया॥ ऊर्यस्याकृष॥ ६॥ वांयुम्वाम्
द्रा॥ नकवर्धकपात्रा॥ प्रकवाही॥ अरुनसिमा॥ मगह्रुखाखा॥ वसनि
नदि॥ सर्वयालेनागा॥ धानाधिक॥ भभन॥ कालवद्वहजडा॥ ह्रुसजट
रक्षान॥ वायुडात्राजा॥ दडाभिर्य॥ वेद्यसिद्धा॥ धधनियो॥ कटिकृष॥ ७॥
७७॥ भन॥ महालक्ष्मी॥ रथनवर्ध॥ रथदा॥ असिहवाही॥ पकटीसिमा॥ म
गज॥ मसांगज॥ ननदानदि॥ कलिकनाग॥ किलिकिलात॥ भभन॥ प
मचन्द्रह्रजडा॥ ह्रुविहिरवात्र॥ महादुत्राजा॥ ह्रुह्रात्र॥ वेद्यसिद्धा
विद्रुपाक॥ ७७॥ भनचत्रिद्रुष॥ ८॥ धनीनिज्ञालावनि॥ वजावनि॥ य
भावनि॥ धनीनि॥ पूर्वकाका॥ ह्रुहा॥ उरुन॥ उरुका॥ भभमा॥ य

शिमस ॥ स्वानास्यानका ॥ दक्षिणस ॥ शुक्रास्यापीना ॥ अग्नेयमडागिद्वर
 पीना ॥ नैमन्ययमद्वीयीननका ॥ वायव्य ॥ मडदिनक ॥ धामा ॥ ॐ ॥
 नकुमसथनीस्यामह ॥ अनायागिन्या ॥ एकवक्त्रा ॥ बहुर्मुखा वामक
 यान ॥ खद्योगिदक्षिण ॥ मंत्रकहिंका ॥ प्रयालीटसवासना ॥ निर्वसना
 यक्षमशामदिना ॥ विनशामक ॥ कथामोदत्रपि ॥ ॥ ॥ नृनियकाय
 यक्ष ॥ अष्टात्र ॥ शुक्र ॥ धनीलिकाय ॥ सखा ॥ नृदडा ॥ योश्वदवीनाय
 वरु ॥ पर्वसज्जनकासम्बन ॥ यक्षवर्ग ॥ दवी ॥ उरुज ॥ हयग्रीवस
 न्वज ॥ खद्युवाहिकादवी ॥ पश्चिमस ॥ आकाशगर्ता ॥ धायान्नस
 न्वन ॥ शुक्रनीदवी ॥ दक्षिणस ॥ हज्जक ॥ धायान्नसम्बन ॥ यक्षव

हिनीदवी ॥ अग्नेयः पञ्चनयः स्वयं ध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः सवीनादवी
॥ नमोऽस्तुः देवीनां ध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः महावनादवी ॥ वायुव्यवहृत्
त्वध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः यक्रवह्निनीदवी ॥ ॐ नमो महावनाध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः
महादवी ॥ ॥ द्वितीयवाक्यकः अस्मिन्कृत्वा यथा ॥ धनीतिवाकः
यक्रसः ध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः ध्यायात्कृत्वा ॥ श्रीः ॥ पूर्वसंज्ञितिकाध्यायात्कृत्वा
स्वस्वः देवावह्निदवी ॥ उरुजः ॥ महावीनाध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः ॥ महारुजवीद
वी ॥ यश्चिससः कृत्वा नाध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः ॥ वायुवगमदवी ॥ दक्षीणसः ॥ सु
हृदाध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः ॥ महारुजवीदवी ॥ अग्नेरुदाध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः
स्यामादवी ॥ नमोऽस्तुः ॥ महारुजवध्यायात्कृत्वा सम्बन्धः ॥ सुहृदकादवी ॥ वाः

यथा॥ विष्णुयाक्षायास्तसम्बल॥ हयकधुदवी॥ ॐ नमो महावगा
धायास्तसम्बल॥ त्वग्मननादवी॥ ॐ ॥ प्रथमविरुचकीअजनीः
लं॥ धनंतिविरुचकस॥ व्यास्तदती॥ व्यास्तदवी॥ हाकवर्ग॥ पूर्वः
स॥ खलुकायाजिनीधायास्तसम्बल॥ प्रवधुदवी॥ उरुजस॥ महाक
काधायास्तसम्बल॥ वधुकिदवी॥ पाश्चिम॥ ककाजधायास्तसम्बल॥
प्रहामनिदवी॥ दोकिधस॥ विरुचकीधायास्तसम्बल॥ महानासादवी॥
म॥ सवीजाधायास्तसम्बल॥ वीजमनिदवी॥ नमस्यसा॥ अमृतारुधा
यास्तसम्बल॥ खर्वनीदवी॥ वायुधस॥ प्रहाधायास्तसम्बल॥ नीकध
नीदवी॥ ॐ नमो दहाकुनिधायास्तसम्बल॥ कर्मकायादवी॥

खलु कयालादयावीनाः प्रकवकाश्चतुर्गुणाः शीनेत्राजयामकूटिना
आलिङ्गनकुञ्जद्वयनवकुञ्जयष्टाः वामकुञ्जद्वयनः कयालखद्योक्तद
किं ह्युत्तमनर्कः यैश्च सदादिगमवाशाटासनस्थिताः सर्वद्वयः
प्रकवकादिषु कुञ्जालिङ्गशः कयालहस्तादकिं ह्युत्तमनर्किकाः
विनयाजोद्वयपिन्यः मूककः अर्धयत्तागसमायन्नादिगम्यमा
यश्चमडाविहयिना ॥ १० ॥ यत्नीलिङ्गनः पूर्वसः ताकिनीदवीः
रुवर्हः उरुमसः ग्रामादवीः मवर्हः यश्चिमसः परकुलो
हादवीः नकवर्हः दकिं ह्यसः नृपिनीदवीः यीनवर्हः प्रनायोगि
न्याः प्रकवकाश्चतुर्गुणाः वामखद्योक्तः दकिं ह्युत्तमनर्किकाः दंष्ट्रा

[illegible]

किं शयीत प्रमित्तं नक्तं वहुलं विनक्तं विह्वलाननं ईशाद्वटलिवनं
विह्वलवर्जं हृदमालिनं ऊनामकुटिनं ऊनामकुटिनं वामवनिगार्धः
वन्द्यधनिनं दक्षिणं वन्द्यधनिनं वन्द्यधनिनं पञ्चकपालधनिनं
द्वादशकुञ्जं पथमकुञ्जद्वयनं वज्रवाहाहिशालिकुञ्जं सवज्रवज्रवध
धर्जं द्वितीयकुञ्जद्वयनं गजवर्गधर्जं रुद्रियकुञ्जद्वयनं उमज्वर
द्वादशधर्जं यमकुञ्जद्वयनं कर्णिकज्वरधर्जं कपालधर्जं पञ्चमकु
ञ्जद्वयनं यमकुञ्जधर्जं वन्द्यधनिनं वन्द्यधनिनं विह्वलवर्जं विह्वलवर्जं सश
यश्च सननसिनमालाधनिनं व्याघ्रचर्मनिवासनी ॥ ४८ ॥ अजवीरुस
हास्यजोडस्यानक कनूषाककुञ्जधर्जं किंशुकवनाञ्जसाविनी ॥ ४९ ॥

शिवकुलकयूनशिवानामि. यस्तु प्रवीरुहभवनि ॥ वस्तु डामुद्रि
दीनविमलुलवामः दक्षिणरागप्रमिन्. सन्वकातिनवि. वामकेशु
ननयूनयाजालीठासनरु. रगवनीधीवक्रसम्बलमात्मानैरावयन् ॥
॥ श्रीहनुकयासनिद्रसं ॥ वज्रस. शक्तिनी ॥ यस्तु स. जामा ॥ गजवम्भ
स. खरकुनीहा ॥ नयिनि ॥ उमनस. काकास्या ॥ खडाद्रुस. उन्नकास्या
करिस. स्वातास्या ॥ पाद्रुस. सफवास्या ॥ यजसस. रुमतामि ॥ याधस. उ
मद्रुमि ॥ विभूजस. उमद्रुष्टी. देवी ॥ युक्तसिनेस. उममथनी. देवी ॥ ध
न. यजस. यजयास. कायवक्र ॥ न. रुस ॥ वाकवक्र ॥ नृगजसा. विरु
वक्र ॥ सयख. देवदेवी. थडीसनिद्रसगर्वा. ज्ञानयुतविष्णुक ॥ श्री

हनुमन्तं ध्यायात्तस्य जन्म भवति ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ दध्मनयाय नमः ॥
 लावलिहूलवज्जालिहूलाननयज्ञावलिहूलानन ॥ अष्टभुज
 नदहाडानन ॥ ॐ ॥ थनयटकानन ॥ पुर्यापुर्ववज्जवाजहि ॥ ॐ ॥
 नवायुष्य ॥ हांथायामिनी ॥ वायुयानसुशक्तिमोहनी ॥ याधिमो ॥ अरुण
 हक्तिमोयानिनि ॥ नेशय ॥ याधिमोहनी ॥ दहिनी ॥ ॐ ॥ न
 रुद्ररुद्रवलिहूलका ॥ नकवर्धनीलवर्धनी ॥ श्रीनवर्धनी ॥ एतेनवर्धनीहनि
 नवर्धनीधेयवर्धनी ॥ प्रगाथागिन्नात्रकवकुत्रुज्जवाभकपाला
 खडाऊदकिहूलमनकलिहूलका ॥ इन्द्राकपालवदनाधिनशामक
 कभायशमडाविनुषिमादिशाम्वना ॥ ॐ ॥ थनवकुदलयनजा

किन्तीनामास्वरधुआहाजुयिनी॥ ६ ॥ एषस्तानि विदिगसा॥ ७ ॥
पञ्चमध्वजियाध्वन्यनारुगवर्गिवजुवानाहिजकवधुमकटका
ध्वजकवकाधिनधीदिगन्धनास्वरधुमधुनाकाहिसमस्वनादिधुजा
वामधुजाध्वजकपूरुधुयालधनादकिशधुजनद्वन्द्वमजनीवजु
कलिध्वजापञ्चमधुजाविधिनसिवाध्वजिजानननीजयाध्वयनतहगा
वकीसमागुष्मातुजागयकिप्रवर्धुनारुगवर्गिगवयम॥ ८ ॥
वैवजधमधुली॥ कृजस्मिासूर्यमधुनसवेजकवधु॥ प्रकमस्वधि
नय॥ दहिनेकनमस्वि॥ नादवयद॥ मकटकसिदिगन्धनादिरु
ऊ॥ दहिनेकलिवाभकयाल॥ खडीग॥ पञ्चमधुजाविधुविनी॥ म

ॐ माता लीला ॥ नाथ रुज धवि हृषिनी ॥ व्याघ्र चर्म कहि वीहिनी
कयूज बन्ध सदनो पूज साहिनी ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥















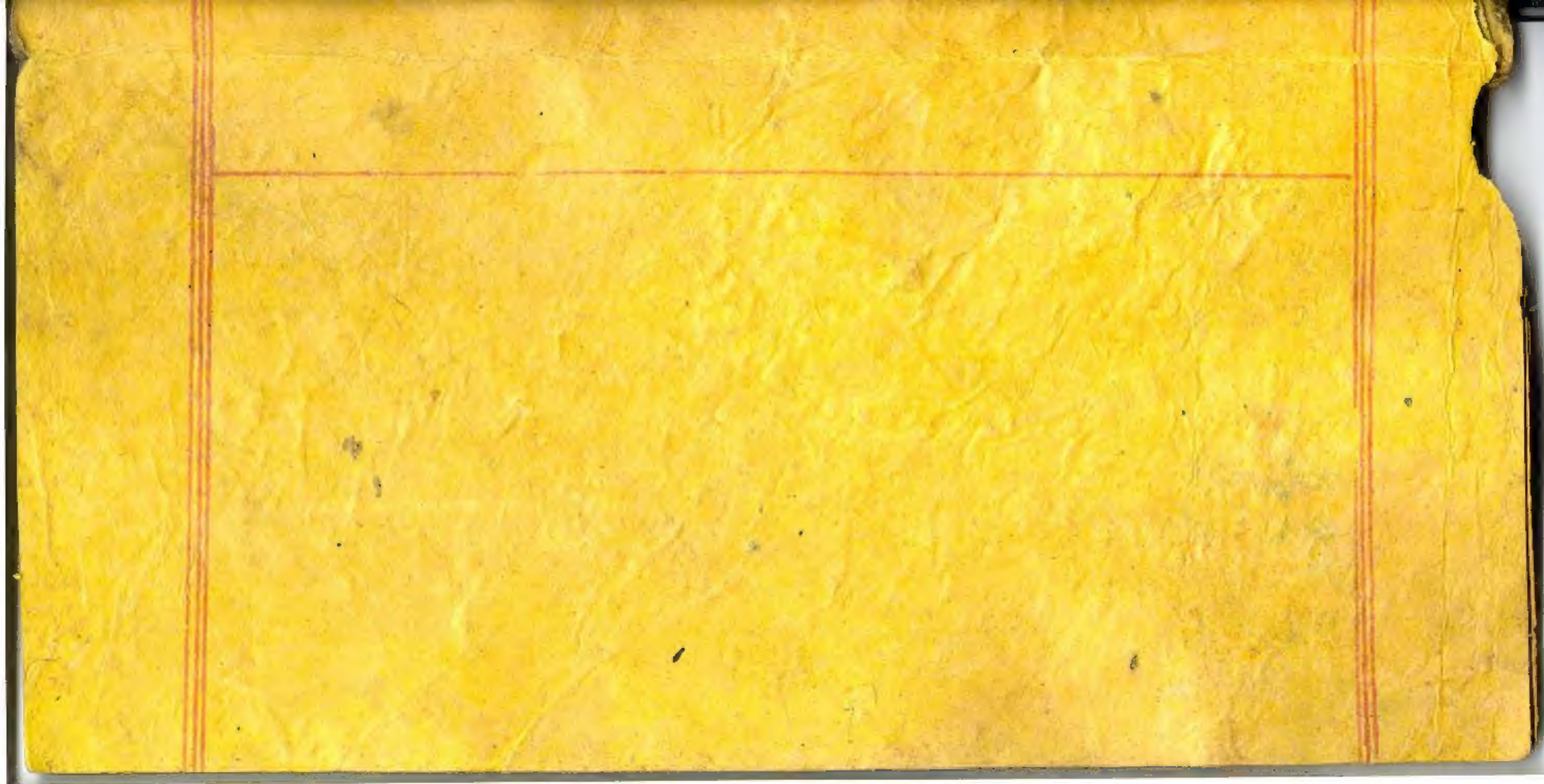












ॐ माजीवियं हं हं ॥ मूल ॥

ॐ माजीवियं सर्वं हं हं विष्णु विनायकानां हं हं ॥ माला मंत्र ॥

ॐ धनं रक्षा जयं रम्यं रवश्च धनं हं हं ॥ व्याघ्र वंश साधन ॥ ५ ॥

१ धं पयासागरुल ॥

श्रीखद्योनाला — ३

कृष्णनाला — ३

कस्तुर — ४

खायकसनाला — ३

मिल — २

याकू गि ^{ध्याग} ह्यायाहा १

अगुज — ३

पालाहा — २

जिह्वा — २

नात्रिस्वी — २

कर्मि हं न विय

रुल ॥ ५ ॥

लला ^{ध्याग}
 याकू गिः ^{ध्याग} स्वायाहा १
 कन २
 धुगुनाला १
 मिलाय १
 यला १
 सकमज १
 नयकशत्रि १
 नकवकन १
 कशत्रि १
 नकि ४

वागना ^{ध्याग} नायन
 रुल ॥ ५० ॥

